Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 15, Issue No. 7, September-2018, ISSN 2230-7540

बिरहोर जनजाति के कल्याणार्थ कतिपय सरकारी कार्यक्रमों का एक ऐतिहासिक विवेचन

Arvind Kumar Upadhyay[1]* Dr. Sudhir Kumar Singh[2]

[1] Research Scholar, History, Jai Prakash University, Chhapra, Bihar

[2] Research Director, Assistant Professor (S. Scale) P.G. Department of History, Jai Prakash University, Chhapra, Bihar

सार – *बिरहोर आदिवासी जंगल में रहने वाले भारत की एक लुप्तप्राय होनेवाली जनजाति है। भारत के उड़ीसा, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश और झारखंड राज्य में यह जनजाति प्रमुख रूप से पाये जाते हैं। झारखंड राज्य के हजारीबाग, गिरीडिह, राँची, लोहरदगा, पलामू, गढ़वा, धनबाद और सिंहभूम जिले में इन्हें देखा जा सकता है। बिरहोरों की मान्यता है कि वे और खरवार समुदाय दोनो सूर्य से इस धरती पर आये हैं। मुंडारी भाषा में बिरहोर का अर्थ होता है, लकड़ी काटने वाला या लकड़हारा। बिरहोर का एक अर्थ जंगलों का मालिक (बादशाह) भी होता है। पहाड़ों और जंगलों में एकांत जीवन व्यतीत करने वाले ये प्राचीन जनजाति हैं। बिरहोरों को दो वर्गों में बाँटा गया है। उथलू अर्थात घुमक्कड़ और जगही अर्थात् अधिवासी। उथलू बिरहोर हमेशा अपना स्थान बदलते रहते हैं। जब कभी इनके रहने के स्थान में खाद्य पदार्थों की कमी हो जाती है ये उस स्थान को छोड़कर जंगल में अन्यत्र प्रस्थान कर जाते हैं। दूसरी ओर जगही बिरहोर स्थायी रूप से निवास करने वाले होते हैं। ये जंगलों के नजदीक स्थायी रूप से भवन या मकान में रहते हैं। इनमें से अधिकतर भूमिहीन होते हैं और शिकार करके तथा रस्सियाँ बेचकर अपनी आजीविका चलाते हैं। सामान्यतया बिरहोर जनजाति छोटे-छोटे समुदायों में रिहायशी क्षेत्रों से सुदूर वन एवं जंगलों में रहते हैं। जनजातियों का यह समुदाय विकास के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और शैक्षणिक मापदंडो के निम्नतम पायदान पर हैं और लुप्तप्राय होने की स्थिति में है। इनके उत्थान, संरक्षण और कल्याणार्थ सरकार द्वारा समय-समय पर अनेक योजनाओं को संचालित भी किए गए जिनके परिणाम कमोबेश सार्थक रहे हैं। प्रस्तुत शोध-आलेख में बिरहोरों के कल्याणर्थ संचालित कतिपय सरकारी कार्यक्रमों को रेखांकित किया गया है।*

कुंजी शब्दः- *जनजाति, लुप्तप्राय, अधिवासी*

----------X----------

शोध-पद्धति और तथ्यों का संकलन:

प्रस्तुत शोध-आलेख विवरणात्मक पद्धति पर आधारित है। शोध-आलेख में अध्ययन का क्षेत्र भारत के झारखंड राज्य का वह प्रक्षेत्र है जहाँ बिरहोर जनजाति की बहुल आबादी है और उनके कल्याणार्थ समय-समय पर कतिपय सरकारी कार्यक्रमों को क्रियान्वित किया गया है। अध्ययन के लिए तथ्यों का संकलन द्वितीय स्त्रोतों पर आधारित है जिसमें संबंधित विषय से अनेक महत्वपूर्ण ग्रन्थ, शोध पत्र-पत्रिकायें और शोध-ग्रन्थ सहायक सामग्री को प्रदर्शित करते हैं।

विवेचन:

बिरहोर आदिवासी जंगल में रहने वाले भारत की एक लुप्तप्राय होनेवाली जनजाति है। भारत के उड़ीसा, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश और झारखंड राज्य में यह जनजाति प्रमुख रूप से पाये जाते हैं। झारखंड राज्य के हजारीबाग, गिरीडिह, राँची, लोहरदगा, पलामू, गढ़वा, धनबाद और सिंहभूम जिले में इन्हें देखा जा सकता है। बिरहोरों की मान्यता है कि वे और खरवार समुदाय दोनो सूर्य से इस धरती पर आये हैं। मुंडारी भाषा में बिरहोर का अर्थ होता है, लकड़ी काटने वाला या लकड़हारा। बिरहोर का एक अर्थ जंगलों का मालिक (बादशाह) भी होता है। बिरहोरों को दो वर्गों में बाँटा गया है। उथलू अर्थात घुमक्कड़ और जगही अर्थात् अधिवासी। उथलू बिरहोर हमेशा अपना

www.ignited.in

स्थान बदलते रहते हैं। खाद्य पदार्थों की कमी होते ही ये उस स्थान को छोड़कर जंगल में अन्यत्र प्रस्थान कर जाते हैं। दूसरी ओर जगही बिरहोर स्थायी रूप से निवास करने वाले होते हैं। ये जंगलों के नजदीक स्थायी रूप से भवन या मकान में रहते हैं। इनमें से अधिकतर भूमिहीन होते हैं और शिकार करके तथा रस्सियाँ बेचकर अपनी आजीविका चलाते हैं। सामान्यतया बिरहोर जनजाति छोटे-छोटे समुदायों में रिहायशी क्षेत्रों से सुदूर वन एवं जंगलों में रहते हैं। जनजातियों का यह समुदाय विकास के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और शैक्षणिक मापदंडो के निम्नतम पायदान पर हैं और लुप्तप्राय होने की स्थिति में है। सन् 2011 की जनगणना के अनुसार आदिम जनजाति की कुल आबादी में से सबसे निम्न स्तर पर बिरहोर जनजाति की आबादी है। बिरहोर की आबादी में वृद्धि न होने की सबसे बड़ी वजह सिमटता जंगल है।

'जगही', 'उथलू':-

बिरहोरों की दो शाखाएँ हैं 'जगही' और 'उथलू'। जगही स्थायी निवास को प्रमुखता देते है और जंगलों अथवा पहाड़ों के नजदीक स्थायी रूप से निवास करते हैं। यह समुदाय अपने स्थायी निवास के इर्द-गिर्द आजीविका के लिए कृषि कार्य भी करते हैं जिसके अन्तर्गत स्थानान्तरिक कृषि पद्धति से मक्का और अन्य फसलों का उत्पादन करते हैं। हालाकि इस तथ्य की प्रामाणिक जानकारी अब तक अनुपलब्ध है कि बिरहोर की एक अन्य शाखा उथलू किस काल में 'जगही' में परिवर्तित होकर स्थायी रूप से निवास करना प्रारंभ किया। बिरहोर की एक अन्य शाखा 'उथलू' घने जंगलों में स्वयं को सुरक्षित महसूस करते हैं और इसलिए जंगलों एवं पहाड़ों में रहने को अभ्यस्त होते हैं और अत्यधिक दिनों तक एक स्थान पर नहीं रहते हैं।

बिरहोरो के कल्याणार्थ कतिपय सरकारी योजनाएँ-

स्वतंत्रयोत्तर भारत में बिरहोर जनजाति के कल्याणार्थ कतिपय सरकारी कार्यक्रमों को क्रियान्वित किए गये। वास्तव में, आजादी के बाद भारत की सरकार के द्वारा जनजातियों के उत्थान और सर्वांगीण कल्याण के लिए विभिन्न विधान बनाये गए। भारतीय संविधान में भी जनजातियों के लिए विशेष प्रावधान किये गए हैं। कतिपय पंचवर्षीय योजनाओं के द्वारा बिरहोर जनजाति के संरक्षण के लिए अनेक कार्यक्रमों को संचालित करने के लिए नीति-निर्धारण और कार्यान्वयन भी हुए हैं। जनजातियों के इस समुदाय के संरक्षण और स्थायित्व प्रदान के लिए राज्य स्तर पर भी अनेक नीतियों का निर्धारण और कार्यान्वयन विभिन्न सरकारों द्वारा किया गया है। जिनमें से कुछ महत्वपूर्ण इस प्रकार हैं-

'इंदिरा आवास योजना'

सरकार ने गुमला जिला के विष्णुपुर प्रखंड में जेहनगुटुआ, कोटिया और बेत्ती में उथलू बिरहोर के स्थायी रूप से निवास करने के लिए कालोनियों का निर्माण कराया है। वर्तमान में हजारीबाग जिले में बिगहा, डेंबू, पेटा, सुल्तान, उदारा इत्यादि कालोनियों में बिरहोर स्थायी रूप से निवास कर रहे हैं। प्रत्येक परिवार को सरकार द्वारा बागवानी के लिए दस डिसमिल भूमि का आवंटन किया गया है। अनेक जिलों में बिरहोर जनजाति के बच्चों के लिए सरकार द्वारा आवासीय विद्यालयों का निर्माण कराया गया है। स्थायी निवास के लिए सरकार द्वारा किये गये सहयोग और समुचित प्रबंधन के परिणामस्वरूप बिरहोर जनजातियों ने इसाई धर्म को स्वीकार किया है जिनसे उनके जीवन शैली में अनेक परिवर्तन देखे गये हैं। गुमला जिला में सिमडेगा प्रखंड के कैटबेरा गाँव में बिरहोरों के स्थायी निवास के लिए सरकार ने 'दो भाया बिरहोर कालोनी' का निर्माण कराया है जिसमें कुल पन्द्रह पक्का भवनों को निर्मित किया गया है और एक एकड़ भूमि कृषि कार्य के लिए बिरहोरों को उपलब्ध कराये गए हैं। इसी प्रकार राँची जिला के अंगाडा प्रखंड में पहारसिंह गाँव में प्रारंभ में सरकारी योजनाओं के द्वारा पन्द्रह पक्का घरों का निर्माण बिरहोरों के लिए किये गए। सन् 1995-96 में सरकार ने इंदिरा आवास योजना के तहत तैंतीस और पक्कों घरों को निर्माण कराया। वर्ष 1997 में बिरहोरों की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए पशुपालन, मधुमक्खी पालन और स्व-व्यवसाय के लिए इन्हें सरकारी अनुदान भी दिये गए।

विष्णुपुर प्रखंड के जेहनगुटुआ, बेत्ती और कटिया सहित अन्य ऐसे क्षेत्र जहाँ बिरहोर की संख्या अधिक है सरकार द्वारा बिरहोर पुनर्स्थापना योजना के तहत इनके स्थायी बसावट के लिए कई पक्का घरों को निर्मित किया गया है और जीविकोपार्जन के लिए कुछ भूमि को इनके लिए कृषि कार्य हेतु सरकार द्वारा उपलब्ध कराये गए हैं। व्यवसायपरक कार्यों के लिए सरकार द्वारा अनुदान भी दिया गया है। सरकार द्वारा उपलब्ध कराये गऐ कुछ भूमियों को निम्न प्रकार से श्रेणीकृत किया गया है-

I) ताना भूमि - इस प्रकार की भूमि लाल रेतीली होती है। जेहनगुटुआ और बेत्ती में ऐसी भूमि पायी जाती है जो मक्का, गोद्यली, अड़हर और उड़द की फसल के लिए उपजाऊ होती है।

www.ignited.in

II) बाड़ी भूमि- यह बिरहोरों के निवास स्थान से बिल्कुल नजदीक होता है और साग-सब्जी के उत्पादन के लिए अत्यधिक उपजाऊ होता है।

गुमला जिला में विष्णुपुर प्रखंड के तीन गाँवों बेत्ती, जेहगुटुआ और कटिया में इस समुदाय के लिए कृषि कार्य हेतु पाँच एकड़ भूमि और प्रत्येक परिवार को 10 डिसमिल भूमि वनरोपण के लिए सरकार द्वारा प्रबंध कराये गए हैं। गुमला जिला में बिरहोर समुदाय के लिए स्थायी रूप से निवास हेतु वन और जंगल से सटे लगभग 90 प्रतिशत भूमि को आरक्षित किये गए हैं जिसे तरण भूमि के रूप में श्रेणीकृत किया गया है।

सन् 1957 से 1959 की अवधि में सरकार द्वारा जेहनगुटुआ और बेत्ती गाँव में क्रमशः 15 और 30 पक्का घरों का निर्माण आवासीय भवन हेतु किये गए। इसी प्रकार 'इंदिरा आवास योजना' के तहत इन दोनो गाँवों में बिरहोर जनजाति के लिए आवास हेतु पक्का भवनों का निर्माण कराया गया। कृषि कार्य हेतु शत-प्रतिशत सरकारी अनुदान पर इनके लिए ट्रैक्टर सहित अनेक कृषि यंत्र उपलब्ध कराये गए हैं और समय समय पर सरकार द्वारा कृषि कार्य हेतु सस्ते दर पर रासायनिक एवं जैविक खाद का भी प्रबंध कराया गया है। गुमला जिला के इन तीन गाँवो में सामुदायिक भवन, स्वच्छ पेय जल के लिए हैंड पंप और बच्चों के लिए विद्यालय का प्रबंध भी किये गए हैं।

इसी प्रकार हजारीबाग जिले के चौपारान प्रखंड में विघा गाँव में सरकार ने बिरहोरों के पुनर्स्थापना के लिए इंदिरा आवास योजनान्तगत तैंतीस पक्के घरों को निर्मित किया। हजारीबाग सदर अनुमण्डल में स्थिति देम्बू गाँव में सरकार ने बिरहोर के स्थायी निवास के लिए बिरहोर कालोनी का निर्माण कराया जिसमें प्रारंभ में पन्द्रह पक्का घर और बाद के वर्षो में बाइस नये पक्का घरों को निर्मित किया गया।

'अन्त्योदय योजना'

अन्त्योदय योजना एक अन्य महत्वपूर्ण योजना है जिसने बिरहोरो के खानाबदोश जीवन में परिवर्तन ला दिया हैं इस योजना के प्रावधानानुसार प्रत्येक परिवार के लिए संपूर्ण पोषण आहार का समुचित प्रबंध सरकार द्वारा किया जाता है। यह योजना ऐसे बिरहोर परिवारों के लिए वरदान साबित हुआ है जिन्हें एक दिन का भी संपूर्ण आहार प्राप्त नहीं हो पा रहा था। इस योजना के तहत वे प्रतिमाह चावल और अनाज प्राप्त करने के लिए आशान्वित रहे हैं और इसलिए स्थायी रूप से किसी निश्चित स्थान पर न केवल रहना प्रारंभ किया है बल्कि अब वे अन्य स्थानीय कार्यों में भी स्वयं को संलग्न करने लगे हैं।

'मनरेगा'-

महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण योजना अर्थात् मनरेगा कार्यक्रम भी बिरहोर समुदाय के लिए सफल हुआ है। यह योजना न केवल इनके लिए रोजगार की गारंटी देता है बल्कि इन्हें निश्चित स्थान पर स्थायी निवास के लिए भी प्रेरित किया है क्योंकि इस योजना से लाभान्वित वही हो सकते हैं जो स्थायी रूप से निवास कर रहे होते हैं।

निष्कर्ष

यद्यपि बिरहोरों के कल्याण के लिए कतिपय सरकारी योजनाओं को प्रारंभ किये गए किन्तु आरंभ से ही उनके कार्यान्वयन की गति अत्यंत धीमी रही है। उदाहरण के लिए 'इंदिरा आवास योजना' का संपूर्ण लाभ प्रत्येक बिरहोर परिवार को अत्यधिक अनुपात में नहीं मिल सका है, इसी प्रकार पोषण संबंध आवश्यकताओं के अनुरूप अन्त्योदय योजना को और अधिक उन्नयन करने की जरूरत है। इसी प्रकार मनरेगा के द्वारा बिरहोरों के लिए एक पूर्ण वर्ष की अवधि के लिए रोजगार सुनिश्चित करने की आवश्यकता है। सरकार की तरफ से निर्धारित अनेक कल्याणकारी योजनाओं के निर्धारण और उनके कार्यान्वयन मे एक बड़ा अंतर है इसलिए सरकार को चाहिए कि बिरहोरो के कल्याणार्थ चलाये जा रहे कार्यक्रमों पर नियंत्रण, अधीक्षण और उसका कार्यान्वय मूलभूत धरातल पर अवश्य हो।

संदर्भ-ग्रंथ

1. Vidyarthi, L.P. and Rai, B.K. (1985). The Tribal Culture of India, Concept Publishing, New Delhi.
2. Roy, S.C. (1925). The Birhors: A little known Jungle Tribe of Chhotanagpur, Man in India Office, Ranchi.
3. Mukherjee, B.M. and Khatua, N. (1996). The Birhor of Madhya Pradesh, 'Man and Life', Vol.22Nos. 1-2. Prasad. N,"Land and People of Tribal Bihar."
4. Majumdar, D.N. (1961). Races and Culture of India, Asia Publishing House, Bombay.
5. Vikaspedia.in.education.
6. Welfare Department, Government of Jharkhand.

www.ignited.in

7. Tribal Welfare Research institute, Ranchi, Jharkhand.

Corresponding Author

Arvind Kumar Upadhyay*

Research Scholar, History, Jai Prakash University, Chhapra, Bihar